वैदिक और आधुनिक समाज में पुरूषार्थ की अवधारणा

कल्पना बेहेरा
शोधार्थी, दर्शन विभाग, पाण्डिचेरी विश्वविद्यालय
पुदुच्चेरी, भारत
Email: kalpana-mansi1083@gmail-com

सारांश

पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । ये जीवन के वे लक्ष्य हैं जिन्हें मनुष्य अपनी जीवन यात्रा संपन्न करने तक प्राप्त करता है । मोक्ष प्राप्त व्यक्ति जीवन चक्र से छूट जाता है। इसीलिए मोक्ष को पुरूषार्थ की श्रेणी में अन्त में रखा गया है । प्रथम पुरूषार्थ है धर्म । यह धर्म नामक पुरूषार्थ मनुश्य को पशुओं से भिन्न करता है । जैसे –

आहारनिद्रा भयमैथुनच सामान्यमेतत् पशुर्भिनराणाम् ।

धर्मों हि तेशामधिको विशेष धर्मेण हीन : पशुभिः समान ।

द्वितीय पुरूषार्थ है अर्थ । अर्थ का अभिप्राय धन से है । धन केवल उतना ही, जिससे जीवनयापन सरलता से हो सके । उपनिषद् का वाक्य है कि अर्थ का उचित रूप में ही भोग करना चाहिए क्योकि धन किसी का भी नहीं होता है –

तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।

तृतीय पुरूषार्थ है काम । काम के विषय में वृहदारण्यक्षोपनिषद् में वर्णन मिलता है कि मनुष्य की प्रत्येक प्रवृति का वजह काम है । जो भी मनुष्य किसी कार्य के लिए प्रवृत होता है वह काम से ही संभव है–

मानवे च सर्वा प्रवृत्तिः कामहेतुकमेवेति ।।

चतुर्थ एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण पुरूषार्थ मोक्ष है । 'मुच' धातु से बना यह शब्द अपने अर्थ को स्वंय सार्थक बना देता है जिसका अर्थ है 'मुक्त' । मुक्त होने से तात्पर्य संसार चक्र से मुक्त होना है । अतः इसे 'परमपुरूषार्थ' कहते है ।

अपने शोध प्रपत्र में इन चारों पुरूषार्थों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हुए तथा इसके साथ–साथ समय–समय पर बदलते स्वरूप को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा कि किस प्रकार भारतीय दर्शन में पुरूषार्थ के स्वरूप को वर्णित किया गया है ***तथा वर्णित स्वरूप वर्तमानकाल में मानव विशेष के लिए यह पुरूषार्थों को क्या अर्थ प्रस्तुत करते है ।*** *वर्तमानकाल में मनुष्य के जीवन में इनका क्या स्थान है । इन तत्वों को उजागर करते हुए दार्शनिक स्वरूप आधार पर विचार किया जाएगा।*

मुख्य शब्द– *पुरूषार्थ, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष।*

प्रस्तावना

पुरुषार्थ अर्थात धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष । इन चार पुरूषार्थों के बिना मनुष्य की जीवन यात्रा असफल समझी जाती है । अतः प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में इन पुरुषार्थों को प्राप्त करने का प्रयास करता है । जीवन के प्रत्येक सोपान में व्यक्ति क्रमशः इन पुरूषार्थ को प्राप्त करता है । पुरूषार्थ प्राप्त व्यक्ति सर्वत्र पूज्य है। पुरुषार्थों के विषय में वेद पुराण ब्राह्मण, अरण्यक उपनिषद्, स्मृति ग्रंथ आदि में विषद् विवेचन प्राप्त होता है ।[1] पुरूषार्थ कि श्रेणी में प्रथम स्थान धर्म को प्राप्त है । मनुष्य के अच्छे चरित्र की पहचान धर्म से ही होती है । वेदो और स्मृतियों में कहे गये धर्म का आचरण करता हूआ मनुष्य इस संसार में यश को पाता है और धर्मानुष्ठानजन्य स्वकर्मादि के अनुतम सुख को प्राप्त करता है ।[2]

धर्म ही वह एक पदार्थ है जो मनुष्य को पशुओं से भिन्न करता है ।

आहारनिद्रा भयमैथुनच सामान्यमेतत् पशुर्भिनराणाम् ।

धर्मो हि तेषामधिको विशेष धर्मेण हीनः पशुभिः समान ।।[3]

स्पष्ट है कि आहार, निद्रा, भय, मैथुन यह प्रवृत्ति सामान्यतः पशुओं में भी देखी जाती है । केवल धर्म ही है जो मनुष्य को पशुओं की श्रेणी से भिन्न करता है। मनुष्य को धर्म का उपदेश सदियों से ही वेद उपनिषेद स्मृति ग्रंथ आदि देते आ रहे है ।

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।[4]

गीता में वर्णन मिलता है –

स्वधर्मे निधनं श्रेयं परधर्मो भयावह :।।[5]

अर्थात अपने धर्म में मरना कल्याणकारक है और दूसरे धर्म भय को देने वाले हैं । कहने का अर्थ है कि मनुष्य को अपने धर्म का पालन सदैव करते रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति धर्म के द्वारा नियंत्रित है। राजा एक राज्य का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति होते हुए भी अपनी निर्बल प्रजा का पालन करता है। ऐसा करने की शिक्षा उसे धर्म ही देता है।[6] अपने धर्म का भले ठीक प्रकार से पालन करने वाले राजाओं की जय गाथा जहां इतिहास के पन्नों में लिखी गई है वहीं ऐसा न करने वालों कि दुर्दशा का वर्णन भी कम नहीं है । अतः धर्म से प्रमाद नहीं करना चाहिए ।[7]

मनुस्मृति में धर्म के निन्मलिखित लक्षण बताए गये हैं –

धृतिः क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशक धर्म लक्षणम् ।।[8]

धृति – धैर्य, सन्तोष

क्षमा – माफ करना

दम – आत्मनियंत्रण

अस्तेय – चोरी न करना

शौच – पवित्रता

इन्द्रिय निग्रह – निग्रहो बाह्यवृत्तीनां

धी – ज्ञान

विद्या – विद्या, सदविद्या

अक्रोधो – क्रोध न करना

ऐसा ही उल्लेख श्रीमदभागवत में भी मिलता है –

अहिंसा सत्य मस्तेय मकामक्रोधलोभता ।

भूतप्रियहितेहा च धर्मोस्यं सार्ववर्णिकः ।। [9]

मनुष्य को सदैव उपर्युक्त धर्म का पालन करते रहना चाहिए क्योंकि नष्ट किया गया धर्म ही व्यक्ति को नष्ट करता है और सुरक्षित धर्म ही व्यक्ति की रक्षा करता है ।[10] अतः असत्य बोलने वाले को दण्डित कर धर्म की रक्षा करनी चाहिए । धर्म को परिभाषित करते हुए मीमांसा दर्शन यज्ञादि के करने को ही धर्म का लक्षण बताया है[11] और न्याय दर्शन विहित कर्म को धर्म मानते हैं।[12]

अर्थ दृ अर्थ से अभिप्राय धन से है । जीवन यात्रा में जीवन यापन के लिए यह एक मुख्य पदार्थ है । वाल्मीकि रामायण में उल्लेख प्राप्त होता है –

यस्यार्थास्य च विक्रान्तों यस्यार्थस्य च बुद्धिमान ।

यस्यार्थोस्यमहाभागो यस्यार्थस्य महागुण ।।[13]

अर्थात जिसके पास धन है वह पराक्रमी है, बुद्धिमान है, भाग्यवान है और महागुणी है। ऐसा ही उल्लेख नीतिशतक में भी मिलता है –

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान् गुणज्ञः ।

स एव वक्तास च दर्शनीयः सर्वे गुणाः काचनमाश्रयन्ते ।।[14]

जिस प्रकार पर्वत से सब नदियाँ निकलती हैं उसी प्रकार धन से सब कार्य सम्पन्न होते है।[15] अर्थ के बिना मनुष्य की लोक यात्रा चल नहीं सकती ।[16]

अर्थ के विषय में आचार्य चाणक्य कहते हैं –

अर्थार्थः प्रवर्तते लोकः ।[17]

काम –मानवे च सर्वा प्रवृत्तिः कामहेतुकमेवेति ।[18]

अर्थात् मानव में समस्त प्रवृत्तियों का कारण काम अर्थात् इच्छा है । जब भी मनुष्य कोई कार्य करता है, वह कार्य काम के बिना संभव ही नहीं है । काम द्वारा प्रत्येक कार्य सर्वप्रथम मानव

मस्तिष्क में जन्म लेता है उसके उपरान्त वह कार्य रूप में प्रस्तुत होता है । किसी स्वादिष्ट भोजन को देखकर मुँह में पानी आ जाना, दूर से किसी हिरण्यमय पदार्थ को देखकर उसे पास से देखने की इच्छा, किसी सुन्दर स्त्री को देखकर मन में काम वासना का उत्पन्न होना भी काम नामक पदार्थ से ही प्रवृत्त होता है । काम से ही ब्रह्म ने जगत की संरचना की ।[19] काम ही मनुष्य को किसी संरचना के लिए प्रेरित करता है । जिस प्रकार ब्रह्म ने काम से प्रेरित हो संसार की रचना की उसी प्रकार काम से प्रभावित मनुष्य से यह इच्छा उत्पन्न हुई की मेरी पत्नी हो और मेरी सन्तान हो ।[20] इसी प्रकार काम से यह संसार चक्र चल रहा है । मनुष्य सदैव फल की प्राप्ति के लिए प्रवृत्त रहता है । अतः उसमें नवीन कार्य करने का उत्साह बना रहता है । मोक्ष दृपुरूषार्थ में अन्तिम परन्तु अत्यन्त महत्वपूर्ण पुरूषार्थ है मोक्ष । जिसका एक अर्थ मुक्ति भी है । जिसका अभिप्राय इस संसार चक्र से मुक्ति से है । मोक्ष शब्द मुच् धातु से बना है, जिसका अर्थ है मुक्त होना। मोक्ष एक विषद विषय है जिस पर न ही वेदो अपितु भारतीय दर्शन में विस्तृत विवेचन मिलता है ।

मोक्ष को कुछ विद्वान उपवर्ग, निर्वाण के नाम से व्याख्यायित करते हैं –

दुः खत्रयाभिघाताज्जिज्ञासा तदपघातके हेतौ ।

दृष्टे सापार्था चौन्नैकान्तात्थन्ततोभावात ।।[21]

साख्य दर्शन के अनुसार त्रिविद दुःख अर्थात अध्यात्मिक, अधिभौतिक, आधिदैविक इन तीन प्रकार के दुःखों से छूठे व्यक्ति को मोक्ष की प्राप्ति होती है । इन तीनों दुःखों से मुक्त व्यक्ति इस संसार में रहता हुआ भी पारलौकिक आनन्द का अनुभव करता है । बृहदारण्यकोपनिषद् में उल्लेख मिलता है ।

मृत्योर्मा अमृतं गमय ।।

मनुष्य इस अमृत का पान सदविद्या अर्थात ब्रम्हविद्या से प्राप्त कर सकता है । सदविद्या को अपनाकर व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है । इसके विपरीत सदविद्या का त्याग कर व्यक्ति कर्म बंधन में फंसा रहता है ।[22]

चार्वाक मतानुयायी कहते हैं । देहच्छेदो मोक्षः।[23] अर्थात आत्मा का विनाश मोक्ष है । इसी प्रकार जैन सम्प्रदाय वाले कहते हैं कि कर्म से उत्पन्न देह में जब आवरण न हो तो जीव का निरन्तर ऊपर उठते जाना ही मोक्ष है।[24] रामानुज सम्प्रदाय में ईश्वर के गुणों की प्राप्ति और उनके स्वरूप का अनुभव करना मोक्ष है।[25] नैयायिक आत्यन्तिक दुःख निवृत्ति को मोक्ष मानते हैं।[26] मीमांसकों के यहाँ विविध वैदिक कर्मों के द्वारा स्वर्ग आदि की प्राप्ति ही मोक्ष है । योगदर्शन मानता है कि चित् शक्ति निरूपाधिक रूप से आपने आप में स्थित हो जाती है तो मोक्ष होता है। अद्वैत–वेदान्त में शंकराचार्य का कहना है कि मूल अज्ञान के नष्ट हो जाने पर अपने स्वरूप कि प्राप्ति अर्थात् आत्मसाक्षात्कार ही मोक्ष है ।[27]

यदि वर्तमान काल में इन पुरुषार्थों की चर्चा की जाए तो इनके स्वरूप में बहुत अन्तर देखने को मिलता है । मनुष्य अपनी सुविधा के अनुसार इन पुरूषार्थों का अर्थ बदल देते हैं ।

जिस धृतिः, क्षमा, दम, अस्तेय आदि की बात आचार्य मनु मनुस्मृति में कहते हैं वह एक भी गुण व्यक्ति में देखने को नहीं मिलता है । सर्वत्र इर्ष्या, द्वेष की भावना व्याप्त दिखती है । मनुष्य दूसरे व्यक्ति से चाहे जैसा भी धर्म के विरूद्ध व्यवहार करे, परन्तु समय आने पर वह यह आशा करता है कि उसके साथ धर्म का व्यवहार हो । जबकि महाभारत में लिखा है कि –

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चौवावधार्यताम् ।
आत्मनोप्रतिकुलानि पेरषां मा सामचरेत् ।।[28]

अर्थात जो मनुष्य व्यवहार अपने लिए उचित न समझे उसे दूसरों पर उपयोग न करें। धर्म शिक्षा देता है कि बलवान व्यक्ति सदैव कमजोर व्यक्ति कि रक्षा करे परन्तु वर्तमान में बलवान व्यक्ति कमजोर व्यक्ति को ही अधिक प्रताड़ित करता हुआ दिखता है। ऐसे व्यक्ति जिनके लिए धन–मद, बुद्धि–वैभव, अत्युन्नत्ति लोक तिरस्कार का साधन है ऐसे व्यक्तियों के लिए प्रकाश भी अन्धकार के समान है ।

अर्थ का जहाँ रामायण, नीतिशतक आदि ग्रन्थों में इतना महत्वपुर्ण रूप प्रस्तुत किया गया है । वही इन्ही ग्रन्थों में इनके विषयों में और भी लिखा गया है जो व्यक्ति को सदैव याद रखना चाहिए यथा –

दातव्यं भोक्तव्यं धनविषये सच्चययो न कर्तव्यः।
पश्येह मधुकिरणां सच्यितमर्थ हरन्त्यन्ये ।।[29]

अर्थात धन का उपयोग कर लेना चाहिए या दान दे देना चाहिए धन का संचय नहीं करना चाहिए । जैसे मधुमक्खियों द्वारा संचित किया गया मध दूसरा कोई ले जाता है। अधिक धन संचय करने वाला व्यक्ति राजा, पानी, चोर और सगे–सम्बन्धियों का भय उसी प्रकार बना रहता है जैसे अन्य प्राणियों को मृत्यु का ।[30] परन्तु यह मानव प्रवृत्ति है कि उसे धन से कभी तृप्ति नहीं हो सकती ।[31] धन की तीन परणीतियाँ होती है ... 1 दान, 2 भोग, 3 नाश । जो व्यक्ति न दान देता है, न भोग करता है उसकी गति होती है अर्थात वह उस धन को खो देता है।[32] नितिशास्त्र कहता है –

अर्थातुराणां न गुरूर्न बन्धुः ।

यह पंक्ति वर्तमान में सत्य होती प्रतीत होती है । आज देखा जाता है कि अच्छा वेतन लेने वाले, अच्छे कारोबार वाले व्यक्ति समाज से कटे–कटे रहते हैं । धन व्यक्ति को बदल के रख देता है । धन का लोभ व्यक्ति को अंधा कर देता है । जब कि ईषावास्योपनिषद् में वर्णन मिलता है कि व्यक्ति को धन का उचित प्रयोग करते हुए उसे अपने से अलग समझना चाहिए क्योंकि इस संसार के भोग किसी के भी नहीं हैं ।[33] अतः मनुष्य धन के प्रति आरिक्त आर्सा को त्याग कर धन का केवल उतना ही मात्रा में धन संचय करना चाहिए, जिससे मनुष्य का जीवन यापन सरलता से हो सके । वर्तमान में यह देखा जाता है कि धनवान व्यक्ति रात भर चिन्ता में सो नहीं पाता और सामान्य धन प्राप्त करने वाला व्यक्ति सर्वत्र निष्चित होकर घूमता है । काम के विषय

में वर्तमान मनुष्य की सोच संकुचित हो गई है । जिस काम शब्द का अर्थ इच्छा हुआ करता था जो सकारात्मक रूप में किसी नवीन निर्माण का कारण हुआ करता था वह अर्थ अब संकुचित होकर केवल वासना मात्र के ही अर्थ में रह गया है । मनुष्य की यह काम इच्छा इतनी बढ़ चुकी है कि पाप, बलात्कार, शारीरिक–शोषण के समाचार आए दिन अखबारों एवं दूरदर्शन की सुर्खियाँ बने रहते हैं । मनुष्य अपने चरित्र से गिरता चला जा रहा है । श्रङ्गारशतक में उल्लेख प्राप्त होता है कि गौरव, पाण्डित्य, कुलनीता और विवेकशीलता तभी तक रहती है जब तक मनुष्य के अंगो में कामाग्नि प्रज्वलित नहीं होती ।[34] अतः मनुष्य को समाज में व्यक्ति को अपनी लाज कुल गौरव को बचाए रखने का प्रयास करना चाहिए । मोक्ष का विषय ही वर्तमान काल में समाप्त हो चुका है । पुरुषार्थों में अन्तिम परन्तु महत्वपुर्ण पुरुषार्थ मोक्ष को 'महापुरूषार्थ' का नाम दिया है । भारतीय इसे परमपुरुषार्थ के रूप में सिद्ध भी करते हैं। यही पुरुषार्थ है जो मनुष्य को परमगति प्राप्त करवाते हुए जीवनचक्र से मुक्त कर परमतत्त्व से मिलाता है । परन्तु मनुष्य इस पुरूषार्थ को अपने जीवन से मिटा ही चुका है । वह भूल चुका है कि जो उत्पन्न हुआ है उसकी मृत्यु निश्चित है । प्राणियों की मृत्यु अवश्वम्भावी है ।[35] समय न आने पर वज्र से आहत होने पर भी कोई मरता नहीं है । जब मृत्यु का समय आ जाता है तो अमृत भी जीव के लिए विष बन जाता है ।[36] अतः मनुष्य को वर्तमान में भी थोड़ा–थोड़ा करके पुण्योपार्जन करना चाहिए।[37] बूँद–बूँद पड़ने से समुद्र तक जाने वाली महानदियाँ बन जाती हैं । पुण्य–पुण्य कमाने से वैदिक धर्म–कर्म का अनुष्ठान कर व्यक्ति अपना इहलोक और परलोक दोनों सुधार सकता है । वर्तमानकाल में परिस्थितियाँ अवश्य पहले से ही बदल चुकी है । समय में बदलाव के साथ–साथ मनुष्य का भी बदलना स्वाभाविक है । परन्तु मनुष्य को वैदिक मर्यादा का भी ध्यान रखना चाहिए। वेदादि में मानव के हित के लिए ही उपदेश दिए गए हैं । वर्तमान काल में यदि इन पुरूषार्थों को देखा जाए तो ऐसा नहीं है कि इनका सर्वत्र अभाव है बल्कि इनका स्वरूप बदल गया है जिसका सर्वाधिक प्रभाव मोक्ष पर पड़ा है । अन्य तीन पुरुषार्थों को व्यक्ति जीवन के प्रत्येक सोपान में प्राप्त करता है । वैदिक काल में विद्यार्थी जीवन में मनुष्य आश्रयों में जाकर धर्म, नीति, शास्त्र आदि विद्याओं को ग्रहण करता था । आधुनिक काल में भी यह प्रथा प्रचलित है जिसमें विद्यार्थी विद्यालय और विश्व विद्यालय में जाकर शिक्षा ग्रहण करते हैं । जिसके आधार पर व्यक्ति अपने आने वाले जीवन की पूर्व पीठिका बनाता है । ग्रहस्थ आश्रम में प्रवेश कर मनुष्य पूर्व आश्रम अर्थात बाल आश्रम में ग्रहण की शिक्षा को प्रयोग में लाता है और धर्म के साथ–साथ अर्थ एवं काम पुरूषार्थ की भी प्राप्ति करता है । वैदिक काल में गृहस्थ आश्रम से व्यक्ति एक आयु सीमा के बाद वानप्रस्थ तत्पश्चात संन्यास आश्रम में प्रवेश कर अन्तिम पुरूषार्थ मोक्ष प्राप्त करता था। वर्तमान में यह आश्रम व्यवस्था समाप्त होने के साथ–साथ मोक्ष का विषय भी समाप्त हो चुका है । यदि व्यक्ति इसे मानता है तो चार्वाक के रूप में जो कहते हैं देह का खत्म हो जाना ही मोक्ष है । जो लोग मोक्ष प्राप्त की इच्छा रखते हैं वे ज्ञान–कर्म और भक्ति में भक्ति मार्ग को अपना मोक्ष प्राप्त की इच्छा करते हैं । संभव है कि समय की व्यस्तता के कारण मनुष्य इन सबका पालन

भी न कर पाए । परन्तु अपने जीवन को सफल एवं सुखपूर्वक बनाए रखने के लिए वेदोक्त कर्तव्य एवं अकर्तव्य को समझ कर जीवन निर्वाह करना चाहिए। ताकि वेदों के साथ–साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति जिसकी पहचान पूरे विश्वभर में बनी है वह आगे भी बनी रहे ।

कुर्वन्नेवह कर्मणि जिजीविशेच्छतः समा ।
एवं त्वयि नान्यथेतोःहस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।।

संदर्भ

1. धर्मार्थ कामा मोक्षाणां यस्यकोपि न विद्यो ।
   अजागलस्तनस्येव तस्य जन्म निरर्थकम् ।। हितोपदेश श्लोक 26
2. श्रुतिस्मृत्युदितं धर्मनुतिष्ठान्हि मानवः ।
   इह किर्तिमवाप्नेति प्रेत्य चानुत्तमं सुखम् ।। मनु.स्मृ., द्वि. श्लोक 9, page no-**45**
   इल क्त. Ramachandra Varma Shatri, Published by Prabhat Paperbacks, 2018.
3. हितोपदेश
4. मनु. स्म.,द्वि. श्लोक 12, p. **45**, R-C- Varma shatri, Prabhat Paperbacks, 2018.
5. श्रीमदभगवदगीता 3/35, p.**92**, 2014.
6. तस्यात् सिद्धं धर्मस्य सर्वबलवत्तस्वात् सर्वं नियन्तृत्तवम् । The Brahadarnyaka Upanisad 2008.
7. धर्मान्न प्रमादित्यव्यम् । तै. उप.1/11, p **362**, Gita press Gorakhpur publication 32 reprint-
8. मनु. स्मृ., 6.92, p.232. R-C- Varma shatri, Prabhat Paperbacks, 2018.
9. श्रीमदभागवद् 11/17/21, p. **590**, C-L- Go swami, 2014.
10. धर्म एवं हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः। तस्याद्धर्मो न हन्तव्यो मानो धर्मो हतोवधीत ।।
    मनु.स्मृ.,8/15, p. **273**. R.C. Varma shatri, Prabhat Paperbacks, 2018.
11. चोदनार्थो लक्षणो धर्मः । मीमांसा दर्शन
12. विहित कर्म जन्यं धर्म । न्याय दर्शन
13. वाल्मीकि रामायण, 6/86/36
14. नितिशतक 37
15. अर्थोभ्यो हि बिनष्टेभ्यः संवृत्तेभ्यस्ततस्ततः।
    क्रिया सर्वाः प्रवर्तन्ते पर्वतेभ्य इवापगाः ।। वाल्मीकि रामायण 6/83/32
16. प्राणयात्रा हि लोकस्य विनार्थ न प्रसिद्धयति ।। महारभारत 12/8/7
17. चाणक्य सुत्र 7/28
18. ब्रहदारण्यकोपनिषद् 1/4/16, p.129, 2008.

19. एको अहं बहु स्याम ।।
20. अतः कर्माधिकारसम्पत्तये भवेज्जायाः।
अथाहं प्रयोजन प्रजारूपेणाहमेवोपाद्वय।।बृ.उ.1/4/16, p.129.2008.
21. सांख्याकारिकागौडपादभाष्य, श्लोक 1
22. विद्यां चाविद्यां च यस्तदवेदोभयसह।
अविद्यायां मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमृनुते । ईशावास्योपनिषद1,p.36,
Gita press Gorakhpur Publication 32 reprint-
23. चार्वाक दर्शन, सर्वदर्शन संग्रह
24. निरोधेभिनवकर्माभावान्निर्जराहेतुसन्निधानेनार्जितस्य
कर्मणो निरसनादात्यन्तिककर्ममोक्षणं मोक्षः । सर्वदर्शनसंग्रह 144
25. कर्मफलस्य क्षयित्वं ब्रह्मज्ञानफलस्य चाक्षयित्वं । सर्वदर्शनसंग्रह 197
26. दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानामुत्तरोत्तरापायेतदनन्तरापायादपवर्गः। न्या.सू.1/1/2
27. तत्वमासि । छान्दो- 6/8/7, p- Gita press Gorakhpur publication 32 reprint-
28. महाभारत 5/27/103
29. पन्चतन्त्र 2/143
30. राजतः सलिलादग्नेश्चोरतः स्वजनादपि ।
भयमर्थवतां नित्यं मृत्योः प्राणभृतामिव ।। महाभारत, वनपर्व 2/39
31. न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य । कठोपनिषद 1/27, p-**96**, Gita press Gorakhpur Publication 32 reprint-
32. दानं भोगो नाशस्तिस्त्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुड़क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ।। नितिशतक 34
33. तेन यक्तेन भुजीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।। इशा.उप-1/1, p-**84**, by Rama Venkataraman, 2009.
34. तात्वन्मध्त्वं पाण्डित्यं कुलीनत्वं विवेकिता ।
यावज्वलिति नाड़गेशु हन्त पश्चेशुपावकः। श्रंगारशतक 1
35. जात्यस्य मरणं ध्रुवम ।
जातानां हि समस्तानां जीवानां नियता मृतिः।। हरिवंशपुराण 61/20
36. नाकाले म्रियते कश्चिद्वज्रेणापि समाहतः ।
मृत्यकालेमश्तं जन्तोविर्षतां प्रतिपद्यते ।। पदमपुराण 48/35
37. स्वल्पं स्वल्पमपि प्राज्ञैः कर्तव्यं सुकृतर्जनम् ।
पतदिमर्बिन्दुभिर्जाता महानद्यः समुद्रगाः ।।पदमपुराण 14/244